जलवायु में बदलाव या वैश्विक गर्मी ?

जलवायु परिवर्तन शब्द का प्रयोग प्राय: वैश्विक गर्मी यानी ग्लोबल वार्मिंग के पर्याय के रूप में किया जाता है। लेकिन, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अनुसार, ''ग्लोबल वार्मिंग' की तुलना में 'जलवायु परिवर्तन' शब्द का प्रयोग बढ़ रहा है क्योंकि इससे पता लगता है कि तापमान बढ़ने के अलावा भी कई परिवर्तन होते हैं।''

जलवायु परिवर्तन का मतलब जलवायु के किसी घटक जैसे तापमान, वर्षा या हवा में काफी यानी दशकों या उससे भी अधिक समय तक हुए किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन से है। जलवायु परिवर्तन इन कारणों से हो सकता है:

- प्राकृतिक कारण जैसे सूर्य की तेज़ी में बदलाव अथवा सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती पृथ्वी में धीरे-धीरे होने वाले परिवर्तन।
- जलवायु प्रणाली से संबंधित प्राकृतिक प्रक्रियाएं जैसे समुद्र के परिसंचरण में परिवर्तन।
- मानवजनित गतिविधियां जिनसे वायुमंडल के संघटन में परिवर्तन हो जाए (जैसे जीवाश्म ईंधनों के जलने से) या भूमि की सतह में परिवर्तन हो जाए (जैसे वनों का विनाश, वन लगाना, शहरीकरण, मरूस्थलीकरण आदि)।

ग्लोबल वार्मिंग का मतलब पृथ्वी की सतह के निकट वायुमंडल तथा क्षोभ मंडल (टोपोस्फेयर) में तापमान के बढ़ने से है जिससे वैश्विक जलवायु में परिवर्तन हो जाता है। ग्लोबल वार्मिंग प्राकृतिक तथा मानवजनित दोनों ही तरह के अनेक कारणों से हो सकती है। आमतौर पर ''ग्लोबल वार्मिंग'' का मतलब उस गर्मी से होता है जो मानव गतिविधियों के कारण उत्सर्जित ग्रीनहाउस गैसों के कारण पैदा होती है।

स्रोत: http://www.epa.gov/climatechange/basicinfo.html

© विज्ञान प्रसार